ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH

उड़ान

प्रिलिम्स वाला (स्टैटिक)

प्रिलिम्स 2025

मध्यकालीन इतिहास

क्विक एवं कॉम्प्रिहेन्सिव रिवीजन सीरीज

विषय सूची

1. प्रारंभिक मध्यकाल 1

- पाल साम्राज्य (750-1161 ई.) 1
- गुर्जर प्रतिहार (अग्निकुल राजपूत) (8वीं-11वीं शताब्दी ई.) 2
- राष्ट्रकूट (753-975 ई.) 3
- जेजाकभुक्ति के चंदेल (बुंदेलखंड) (9वीं-13वीं शताब्दी) 4
- मालवा के परमार (9वीं-14वीं शताब्दी ई.) 4
- दिल्ली के तोमर (8वीं-12वीं शताब्दी) 4
- शाकंभरी के चाहमान या चौहान (छठी-बारहवीं शताब्दी ई.) 5
- गहड़वाल (11वीं-12वीं शताब्दी ई.) 5
- त्रिपुरी के कलचुरी (10वीं-12वीं शताब्दी) 5
- गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) (950-1300 ई.) 6
- कश्मीर 6
- असम के राजवंश 6
- वर्मन और सेन (पूर्वी बंगाल) 6
- कलिंग, उड़ीसा 6
- कल्याणी के चालुक्य (10वीं-12वीं शताब्दी ई.) 7
- देवगिरि के यादव 7
- काकतीय राजवंश (950-1323 ई.) 7
- चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) 7
- होयसल (10वीं-14वीं शताब्दी) 10
- उत्तरकालीन पांड्य 10
- भारत में घुरीद (Ghurids in India) 13

2. दिल्ली सल्तनत 14

- गुलाम या मामलुक वंश (1206-1290ई.) 14
- खिलजी वंश (1290 ई. से 1320 ई.) 16
- तुगलक वंश (1320 ई. से 1413 ई.) 17
- सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.) 19
- लोदी वंश (1451-1526 ई.) 19
- दिल्ली सल्तनत का जन-जीवन 19

3. बहमनी और विजयनगर साम्राज्य 22

- बहमनी साम्राज्य (1347-1527 ई.) 22
- विजयनगर साम्राज्य (1336-1650 ई.) (कर्नाटक साम्राज्य) 23
- विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन 26
- नायक प्रणाली 26
- समाज 27
- अर्थव्यवस्था 27
- हम्पी / विजयनगर की स्थापत्यकला 28
- घटनाक्रम 28

4. मुगल साम्राज्य 29

- बाबर (1526-1530 ई.) 29
- हुमायूँ (1530-1540 ई. और 1555-1556 ई.) 30
- शेरशाह सूरी (सूर साम्राज्य) (1540-1555 ई.) 30
- अकबर (1556-1605 ई.) 31
- जहाँगीर (1605-1627 ई.) 34
- शाहजहाँ (1628-1658 ई.) 35
- औरंगजेब (1658 - 1707 ई.) 36
- बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई.) 37
- जहाँदार शाह (1712-1713 ई.) 37
- फर्रुखसियर (1713-1719 ई.) 38
- मुहम्मद शाह (रंगीला) (1719-1748 ई.) 38
- आलमगीर द्वितीय (1754-1759 ई.) 38
- शाह आलम द्वितीय (1759-1806 ई.) 38
- अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.) 38
- बहादुर शाह द्वितीय (1837-1857 ई.) 38
- मुगलों के पतन के कारण 39

5. मराठा साम्राज्य 40

- शिवाजी (1627-1680 ई.) 40
- मराठा प्रशासन 42

- पेशवाओं का शासन (1713-1818 ई.) 43
- बालाजी बाजी राव (1740-1761 ई.) 43
- पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई.) 43
- आंग्ल-मराठा युद्ध 44
- पेशवाओं के अधीन मराठा प्रशासन (1714-1818 ई.) 45

6. भक्ति और सूफी परंपराएँ 48

- वीरशैव/लिंगायत परंपरा 49
- तंत्रवाद 50
- भक्ति आंदोलन 50
- चिश्तिया सिलसिला 53
- कादरिया सिलसिला 54
- सुहरावर्दी सिलसिला 54
- नक्शबंदी सिलसिला 55

7. विदेशी यात्रियों की नजर से 56

- अल-बरूनी (किताब-उल-हिंद) 56
- इब्न बतूता (रिहला) 56
- फ्रांस्वा बर्नियर (मुगल साम्राज्य में यात्राएँ) 57

8. परिशिष्ट 58

- मध्यकालीन इतिहास में राजवंशों का कालक्रम 58

1 प्रारंभिक मध्यकाल

परिचय

- "प्रारंभिक मध्यकाल" वाक्यांश का तात्पर्य प्राचीन काल और मध्यकाल के बीच की **संक्रमणकालीन अवधि से है।** इस काल की मुख्य विशेषता यह थी कि इसमें स्थानीय स्तर पर **अनेक राज्यों का उदय हुआ।**
- **हर्ष की मृत्यु (647 ई.)** के बाद, **कश्मीर के ललितादित्य (कार्कोट वंश) ने** कुछ समय के लिए पंजाब, **कन्नौज** और बंगाल के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण किया, लेकिन अन्य साम्राज्यों के उदय के कारण उनकी शक्ति कम हो गई।
  - **कल्हण की राजतरंगिणी में** उल्लेख है कि **यशोवर्मन** (8वीं शताब्दी, कन्नौज का **वर्मन वंश**) को ललितादित्य ने पराजित किया था।

अनंतनाग (कश्मीर) में **मार्तंड सूर्य मंदिर** का निर्माण ललितादित्य (8वीं शताब्दी ईस्वी) ने करावया था।

- **उत्तर भारत, दक्कन** और **दक्षिण भारत में कई बड़े राज्यों का उदय हुआ।** हालाँकि, गुप्त और हर्ष के साम्राज्यों के विपरीत, ये उत्तर भारतीय साम्राज्य संपूर्ण गंगा घाटी पर नियंत्रण स्थापित करने में विफल रहे।
  - **चक्रवर्ती सम्राट** का दर्जा प्राप्त करने और **कन्नौज पर नियंत्रण** के लिए **प्रतिहारों, पालों और राष्ट्रकूटों** के बीच **'त्रिपक्षीय संघर्ष'** हुआ।

- **पाल साम्राज्य:** 9वीं शताब्दी तक **पूर्वी भारत (बंगाल)** पर प्रभुत्व था।
- **प्रतिहार साम्राज्य**: 10वीं शताब्दी तक **पश्चिमी भारत (जालौर-राजस्थान)** और ऊपरी गंगा घाटी पर शासन किया।
- **राष्ट्रकूट साम्राज्य: दक्कन** तथा **उत्तर और दक्षिण भारत** के कुछ हिस्सों पर शासन था, जो दोनों क्षेत्रों के बीच एक पुल के रूप में कार्य करता था।

पाल साम्राज्य (750-1161 ई.)

पाल साम्राज्य की स्थापना **गोपाल (750-770 ई.)** ने की थी और अरबों द्वारा इसे **"धर्म का साम्राज्य"** कहा जाता था। उसने **ओदंतपुरी (बिहार)** में एक बौद्ध महाविहार की स्थापना की।

धर्मपाल (780-810 ई.)

उसने **परमेश्वर, परमभट्टारक और महाराजाधिराज** की उपाधियाँ धारण कीं।

साम्राज्य विस्तार/विजय

- **खलीमपुर ताम्रपत्र शिलालेख** में उसके राज्य की सीमा का उल्लेख है जिसमें बंगाल, बिहार, उड़ीसा के कुछ हिस्से, नेपाल, असम और कुछ समय के लिए कन्नौज शामिल था।
- **धर्मपाल** ने उत्तर भारत पर अपना प्रभाव जमाने और अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए **कन्नौज में एक भव्य दरबार का आयोजन किया।**

स्थापत्यकला:

- **भागलपुर (बिहार)** में **विक्रमशिला मठ (जो विश्वविद्यालय के रूप में भी काम करता था) की** स्थापना की।
- **सोमपुरा (बांग्लादेश)** में एक भव्य विहार का निर्माण करवाया।
- **धार्मिक प्रभाव**: उसने **बौद्ध दार्शनिक हरिभद्र** को संरक्षण दिया।

देवपाल (810-850 ई.)

- **साम्राज्य विस्तार/विजय**: वह **धर्मपाल** का पुत्र था, उसने **पूर्व की ओर कामरूप (असम)** तक पाल साम्राज्य का विस्तार किया। उसने राष्ट्रकूट शासक **अमोघवर्ष** को पराजित किया।
- **धार्मिक प्रभाव**: वह बौद्ध धर्म का भी महान **संरक्षक था** और उसने **सुवर्णदीप (सुमात्रा) के शैलेन्द्र वंश** के राजा **बालपुत्रदेव को** नालंदा में अपने द्वारा निर्मित एक मठ की देखरेख के लिए पाँच गाँव दिए थे।

अन्य शासक

- **महिपाल प्रथम (988-1038 ई.)** विग्रहपाल द्वितीय का पुत्र था जिसने **राजेंद्र चोल** के आक्रमण को गंगा नदी के पार रोका था।
- **रामपाल (1077-1120 ई.)** ने पाल वंश के खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन उसकी मृत्यु के बाद, पाल वंश का शासन केवल मगध (बिहार) के एक हिस्से तक ही सीमित रह गया और केवल थोड़े समय के लिए ही अस्तित्व में रहा।

पाल वंश का पतन

- **राजपाल, गोपाल तृतीय** और **विग्रहपाल द्वितीय** के शासनकाल के दौरान पाल वंश का तेजी से पतन होने लगा था।
- **मिहिर भोज** के अधीन जालौर में **प्रतिहारों** के उदय और **राष्ट्रकूटों के** पाल क्षेत्रों में आगे बढ़ने से पालों का पतन अपरिहार्य हो गया।
- सेन वंश के **विजयसेन ने पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल** (1130-1150 ई.) को बंगाल से निष्कासित कर दिया और अपने वंश का शासन स्थापित किया।

व्यापार:

- **दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार संबंध**: कपड़ा, मिट्टी के बर्तन, चावल प्रमुख वस्तुएँ थीं।
- **दक्षिण-पूर्व बंगाल** 7वीं से 11वीं शताब्दी तक अरब व्यापारिक बस्तियों को मलाया प्रायद्वीप और इंडोनेशियाई द्वीपसमूह से जोड़ने वाला एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था।

कला और स्थापत्यकला:

- **धीमान** और उसके पुत्र **विटपाल** इस काल के महान चित्रकार, मूर्तिकार और कांस्य मूर्ति निर्माता थे।
- पाल मूर्तिकला पर **गुप्त कला का प्रभाव था।**
- पालों द्वारा ताड़ के पत्तों पर लघु चित्रकला की शुरुआत की गई। पाल काल में कांस्य की मूर्तियाँ लॉस्ट वैक्स तकनीक (सेरे पेरड्यू) के माध्यम से बनाई गई थी।
- **महिपाल प्रथम ने सारनाथ, नालंदा** और **बोधगया** में कई पवित्र स्थलों का निर्माण और मरम्मत करवाई।
- पाल युग में कई तालाबों और नहरों का निर्माण भी देखा गया, जो लोक निर्माण संबंधी महत्त्वपूर्ण पहलों को दर्शाता है।

साहित्य:

- **ग्रंथ और दर्शन: गौड़पाद (अद्वैत वेदांत संप्रदाय के विद्वान)** द्वारा संकलित **आगम शास्त्र; श्रीधर भट्ट** कृत **न्याय कुंडली।**
- **विक्रमशिला** और **नालंदा** विश्वविद्यालयों के **बौद्ध विद्वान आतिशा, सरहा, तिलोपा, दानशील, दानश्री, जिनमित्र, मुक्तिमित्र, पद्मनाव, विराचन और शीलभद्र थे।**
- **संध्याकर नंदी द्वारा रचित रामचरितम, पाल शासक रामपाल** की जीवनी है, जिसमें वर्णन किया गया है कि कैसे वन प्रमुखों को भव्य उपहारों के माध्यम से अपने गठबंधन में शामिल किया गया।
- उन्होंने संस्कृत विद्वानों को संरक्षण दिया। संस्कृत साहित्य में **गौड़ी-रीति की साहित्यिक शैली का विकास हुआ।**
- **चक्रपाणि दत्त, सुरेश्वर गदाधर वैद्य** पाल काल के दौरान **चिकित्सा** से संबंधित ग्रंथों के लेखक थे।
- **महिपालगीत (महिपाल पर गीत):** यह लोक गीतों का एक समूह है जो अभी भी बंगाल के ग्रामीण इलाकों में लोकप्रिय हैं।
- हिंदू विधि की प्रसिद्ध पुस्तक **"दायभाग" है। जो उत्तराधिकार प्रक्रिया पर आधारित है, इसकी** रचना **जिमूतवाहन** ने की।

धर्म:

- वे कट्टर बौद्ध थे और उन्होंने **महायान बौद्ध धर्म का प्रचार किया। दीपांकर श्रीज्ञान** जैसे प्रख्यात बौद्ध विद्वान, पाल के शासनकाल में फले-फूले और **विक्रमशिला विश्वविद्यालय, तिब्बती भिक्षुओं** का एक प्रमुख केंद्र बन गया।
- उन्होंने ब्राह्मणों का भी समर्थन किया और मंदिरों का निर्माण कराया।

पाल शासकों ने शिक्षा और धर्म को संरक्षण प्रदान किया, इसकी पुष्टि विदेशी राजाओं से प्राप्त विभिन्न साहित्यिक स्रोतों व यात्रा विरणों से से होती है, जिसमें **जावा और सुमात्रा के राजा भी शामिल** थे, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय छात्रों को सुविधा प्रदान करने के लिए नालंदा में एक छात्रावास की स्थापना के लिए अनुरोध किया था।

गुर्जर प्रतिहार (अग्निकुल राजपूत) (8वीं-11वीं शताब्दी ई.)

परिचय

गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना **हरिचन्द्र** ने की थी, जिसे **अरब लोग अल-जुर्ज** कहते थे।

साम्राज्य विस्तार/विजय:

- **9वीं शताब्दी** तक **मध्यदेश** और **कन्नौज** के एक बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया।
- प्रारंभ में उन्होंने **भीलमल** से शासन किया और बाद में **अपनी राजधानी कन्नौज स्थानांतरित कर ली।**
- प्रतिहार, **अरब सेनाओं के विरोध और पालों** तथा **राष्ट्रकूटों** के साथ अपने रणनीतिक संघर्षों के लिए जाने जाते थे।

महत्त्वपूर्ण शासक

शासक और शासनकाल	प्रमुख उपलब्धियाँ और घटनाएँ
नागभट्ट प्रथम (730-760 ई.)	राजस्थान, मालवा और गुजरात को शामिल करने के लिए क्षेत्रों का विस्तार किया। अरब आक्रमणों को सफलतापूर्वक दमन किया, जिससे राजवंश की प्रमुखता स्थापित हुई।
वत्सराज (780-800 ई.)	साम्राज्य का और विस्तार किया। इसमें राजस्थान, मालवा और गुजरात के क्षेत्रों को अपने राज्य में शामिल किया।
नागभट्ट द्वितीय (800-833 ई.)	काठियावाड़, आंध्र, कलिंग और विदर्भ के शासकों द्वारा स्वीकार किए गए आधिपत्य और असफल होने के बाद राजवंश को पुनर्जीवित किया। बंगाल के धर्मपाल और राष्ट्रकूट शासक गोविंदा तृतीय के साथ संघर्ष।
मिहिरभोज (836-885 ई.)	पंजाब और काठियावाड़ से लेकर कौशल और कन्नौज तक एक विशाल साम्राज्य को मजबूत किया। भोज प्रथम ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया, जिसे महोदया के नाम से भी जाना जाता है। बराह ताम्रपत्र शिलालेख में महोदया में एक सैन्य शिविर (स्कंधवार) का उल्लेख मिलता है, जो कन्नौज के सामरिक महत्त्व को दर्शाता है।
महेंद्रपाल प्रथम (885–910 ई.)	विष्णु के उपासक के रूप में 'आदि वराह' की उपाधि धारण की। मगध और उत्तरी बंगाल के कुछ हिस्सों में साम्राज्य का विस्तार किया। अपने पूर्ववर्तियों द्वारा स्थापित सांस्कृतिक और प्रशासनिक ढाँचे को मजबूत किया।
महिपाल प्रथम (913-944 ई.)	उन्होंने साम्राज्य का पुनर्निर्माण एवं पुनर्गठन किया। राजशेखर उनके दरबारी कवि थे।

- **राजशेखर,** एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि, नाटककार और आलोचक था जिसे महेंद्रपाल प्रथम (885-910 ई.) और महिपाल प्रथम (913-944 ई.) का संरक्षण प्राप्त था।
- **राजशेखर द्वारा रचित महत्त्वपूर्ण कृतियाँ:**
  - **कर्पूरमंजरी:** उनकी पत्नी अवंतीसुंदरी को समर्पित एक प्राकृत नाटक।
  - **काव्य मीमांसा:** एक संस्कृत ग्रंथ (880-920 ई.पू.) जो कवियों को काव्य रचना पर व्यावहारिक सलाह प्रदान करता है।
  - **अन्य रचनाएँ:** विधासलभंजिका, भृंजिका, बालरामायण, प्रपंच पांडव, बालभारत, भूषण कोष।

पतन: बाद के कमज़ोर शासक द्वारा राष्ट्रकूटों के हमलों का सामना करते हुए विशाल साम्राज्य को कायम नहीं रख सके। पतन ने चालुक्य, चंदेल, चाहमान, गढ़वाल, परमार, कलचुरी और तोमर जैसे कई नए राज्यों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया, जो अपने-अपने क्षेत्रों में अलग-अलग राजपूत वंशों के रूप में स्वतंत्र हो गए।

राष्ट्रकूट (753-975 ई.)

पृष्ठभूमि

- उन्होंने स्वयं को **अशोक के शिलालेखों** में वर्णित कन्नड़ भाषी क्षेत्र के एक कबीले **रथिक** का वंशज बताया।
- राष्ट्रकूट, जिन्हें **अरब लोग बल्लाहारा कहते थे, 743 ई. के आस-पास दक्कन** में एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरे, जो अपनी राजधानी **मान्यखेत, वर्तमान मालखेड** से शासन कर रहे थे।
- उन्हें **संस्कृत** और **अरबी दोनों अभिलेखों में** लगभग दो शताब्दियों तक भारत में एक प्रमुख शक्ति के रूप में **स्वीकार किया गया** है, अरब यात्रियों ने राष्ट्रकूट शासक को **अल-हिंद के "राजाओं के राजा (मलिक अल-मुलुक)" के रूप में वर्णित किया है।**
- अरब वृत्तांतों, विशेष रूप से **अल-मसूदी** के वृत्तांतों में राष्ट्रकूट **साम्राज्य की भव्यता का** सुंदर वर्णन किया गया है। साम्राज्य की अपार संपत्ति का श्रेय समुद्री व्यापार से होने वाले लाभ को दिया जाता है।

महत्त्वपूर्ण शासक

शासन और समयावधि	प्रमुख योगदान
दंतिवर्मन/दन्तिदुर्ग (735-756 ई.)	राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक। मालवा में गुर्जर-प्रतिहारों सहित क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। क्षत्रियत्व का दावा प्रस्तुत करने के लिए हिरण्यगर्भ अनुष्ठान किया।
कृष्ण प्रथम (756-774 ई.)	हैदराबाद और मैसूर को शामिल करते हुए साम्राज्य का विस्तार किया। एलोरा में कैलाश मंदिर का निर्माण किया, जो एक महत्त्वपूर्ण वास्तुशिल्प उपलब्धि थी।
ध्रुव धारावर्ष (779-793 ई.)	उत्तरी अभियानों का नेतृत्व किया, वत्सराज (प्रतिहार राजा) और धर्मपाल (पाल राजा) को पराजित किया। गंगा और यमुना को राष्ट्रकूटों के प्रतीक के रूप में शामिल किया।
गोविंदा तृतीय (793–814 ई.)	नागभट्ट द्वितीय (प्रतिहार शासक) को युद्ध में पराजित किया। हिमालय तक अभियान किये और प्रयाग, बनारस और गया का दौरा किया।
अमोघवर्ष प्रथम (814-878 ई.)	जैन धर्म के प्रमुख अनुयायी; धार्मिक और साहित्यिक परंपराओं को संरक्षण प्रदान किया। कविराजमार्ग, जो आरंभिक कन्नड़ ग्रंथों में से एक है, और रणमालिका की रचना की। अमोघवर्ष प्रथम की पुत्री चंद्रबल्लबे ने कुछ समय तक रायचूर दोआब पर शासन किया। नृपतुंगा और वीर-नारायण जैसी उपाधियाँ धारण की। तुंगभद्रा नदी में जल-समाधि द्वारा अपना जीवन समाप्त किया। कमज़ोर सैन्य रणनीतियों के कारण अमोघवर्ष प्रथम के शासन में राष्ट्रकूटों का पतन आरंभ हो गया।
इन्द्र तृतीय (914-929 ई.)	प्रतिहार शासक महिपाल के विरुद्ध उत्तरी क्षेत्र में सफल अभियान संचालित किया।
कृष्ण तृतीय (939-967 ई.)	चोलों पर विजय प्राप्त करते हुए कांची और तंजौर पर अधिकार स्थापित किया। रामेश्वरम में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया।

अमोघवर्ष प्रथम (814-880 ई.)

- अमोघवर्ष प्रथम समकालीन भारत की धार्मिक परंपराओं में रुचि रखता था और अपना समय जैन भिक्षुओं की संगति में बिताता था। उसके शिलालेख जैन धर्म के सबसे प्रमुख अनुयायियों में उसकी गिनती करते हैं।
- उसने **कन्नड़** साहित्य के सबसे प्राचीन ग्रंथों में से एक **कविराजमार्ग की रचना की।**
- उसने नृपतुंग, अतिशयधवल, महाराजा-शंद और वीर-नारायण की उपाधियाँ धारण कीं।
- उसने तुंगभद्रा नदी में **जल-समाधि** लेकर अपना जीवन समाप्त कर लिया।
- कमजोर सैन्य कौशल के कारण उसके शासनकाल में राष्ट्रकूटों का पतन शुरू हो गया। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण द्वितीय के शासनकाल में साम्राज्य और अधिक कमजोर हो गया।
- **इंद्र तृतीय** ने उत्तर की ओर **प्रतिहार शासक महीपाल** के विरुद्ध एक सफल अभियान चलाया।
- **कृष्ण तृतीय** ने कांची और तंजौर जैसे क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया, यहाँ तक कि चोलों पर विजय प्राप्त की और **रामेश्वरम में एक विजय स्तंभ स्थापित किया।**

धर्म

- राष्ट्रकूट विभिन्न धर्मों के संरक्षक थे, जिनमें **शैव, वैष्णव, शाक्त संप्रदाय और जैन धर्म शामिल थे।**
- मुहरों पर विष्णु के गरुड़वाहन के चित्र थे।
- राष्ट्रकूटों द्वारा तुलादान द्वारा मंदिर के देवताओं को अपने वजन के बराबर सोना भेंट करने का भी उल्लेख मिलता है।
- उन्होंने **मुस्लिम व्यापारियों को** अपने राज्यक्षेत्र में इस्लाम का पालन करने और प्रचार करने की अनुमति दी, जिससे **विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई।**

साहित्य

- **अमोघवर्ष प्रथम ने संस्कृत कृति 'प्रश्नोत्तर रत्नमालिका'** और **कन्नड़** कृति **कविराजमार्ग की रचना की।**
- **जिनसेन ने** जैनियों का **आदिपुराण** लिखा।
- कृष्ण द्वितीय के आध्यात्मिक गुरु **गुणभद्र ने जैनियों का महापुराण** लिखा।
- **प्राचीन कन्नड़ साहित्य के तीन रत्नों** - कविचक्रवर्ती **पोन्ना, कविचक्रवर्ती रन्ना** और **आदिकवि पम्पा** - को **राष्ट्रकूट** राजा **कृष्ण तृतीय** के साथ-साथ **पश्चिमी चालुक्यों के तैलप और सत्याश्रय द्वारा संरक्षण दिया गया था।**
- प्रख्यात अपभ्रंश कवि **स्वयंभू** और उनका पुत्र संभवतः राष्ट्रकूट दरबार में रहते थे।

उत्तर के राजवंश

जेजाकभुक्ति के चंदेल (बुंदेलखंड) (9वीं-13वीं शताब्दी)

चंदेलों ने प्रारंभ में **गुर्जर प्रतिहारों के सामंतों** के रूप में कार्य किया और स्वयं को **ऋषि चंद्रात्रेय** का वंशज बताया। चंदेल वंश की स्थापना **नन्नुक (831-845 ई.)** ने की थी। **[यूपीएससी 2022]**

चंदेलों की स्थापत्य विरासत खजुराहो के भव्य मंदिरों में दिखाई देती है।

चंदेलों की स्थापत्य विरासत

- चंदेलों की स्थापत्य विरासत को खजुराहो के भव्य मंदिरों में देखा जा सकता है।
- उल्लेखनीय उदाहरणों में लक्ष्मण मंदिर (लगभग 930-950 ई.), विश्वनाथ मंदिर (लगभग 999-1002 ई.) और कंदारिया महादेव मंदिर (लगभग 1030 ई.) शामिल हैं, जिन्हें क्रमशः चंदेल शासकों यशोवर्मन, धंग और विद्याधर के शासनकाल के शासनकाल में बनाया गया था।

प्रसिद्ध शासक

- पहले स्वायत्त चंदेल शासक **यशोवर्मन (925-950 ई.)** ने उत्तर भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसके पुत्र **धंग/धंगदेव (950-999 ई.) ने** प्रतिहार प्रदेशों पर कब्जा कर लिया और **सुबुक्तिगिन** के खिलाफ **शाही शासक जयपाल का समर्थन किया**, जबकि **धंग के पुत्र गंड/गंडदेव (999-1002 ई.) ने महमूद गजनवी** के खिलाफ जयपाल के पुत्र **आनंदपाल की सहायता की।**
- **विद्याधर (1003-1035 ई.)** (गंड का पुत्र) एक शक्तिशाली **चंदेल राजा था।** उसने **प्रतिहारों को अपने अधीन कर लिया।**
- उत्तरवर्ती चंदेल शासक **परमर्दिदेव (1165-1203 ई.) को पृथ्वी राज तृतीय** और **कुतुबुद्दीन ऐबक से पराजय का सामना करना पड़ा**, लेकिन उसके वंशज ने **1205 ई. तक कालिंजर पर पुनः कब्जा कर लिया** क्योंकि तुर्क उस पर कब्जा बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे। कालिंजर किला 1545 **ई.** तक देशी शासकों के अधीन रहा, इसके बाद यह अफगानों के अधीन हो गया।

मालवा के परमार (9वीं-14वीं शताब्दी ई.)

- मालवा के परमार मूलतः प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के जागीरदार थे। 10वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वे एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में उभरे। **उपेन्द्र (कृष्णराज) (800-818 ई.) ने** परमार वंश की स्थापना की और **धार** को अपनी राजधानी बनाया। **मुंज/वाक्पतिराज द्वितीय (972-990 ई.)** एक प्रसिद्ध शासक था।
- वह कला और साहित्य का संरक्षक था। उसके दरबार की शोभा बढ़ाने वाले विभिन्न कवि निम्नलिखित थे:
  - **धनंजय** कृत **दशरूपकम्।**
  - **पद्मगुप्त** कृत **नव-सहसांक-चरित।**
  - अन्य कवियों में **हलायुध** और **धनिक** शामिल हैं।
- **राजा भोज:** उसके शासनकाल में परमार वंश अपने चरम पर पहुँच गया था।
- **1008 ई. में उसने महमूद गजनवी** के विरुद्ध **आनंदपाल की** सहायता के लिए एक सेना भेजी और आनंदपाल के पुत्र **त्रिलोचनपाल** को आश्रय दिया।
- उसे **चालुक्य** और **कलचुरियों के आक्रमणों का सामना करना पड़ा।**
- **1043 ई.** में, वह देशी सरदारों के संघ में शामिल हो गया जिन्होंने तुर्कों से हांसी, थानेसर, नगरकोट और अन्य क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की।
- भोपाल के निकट **भोजपुर** नगर की स्थापना की।

उसने चिकित्सा, खगोल विज्ञान, धर्म और स्थापत्यकला जैसे विषयों पर किताबें लिखीं।

- **श्रृंगार प्रकाश,** व्याकरण पर एक पुस्तक।
- **समराङ्गण सूत्रधार** वास्तुशास्त्र पर एक लोकप्रिय पुस्तक है।
- **चम्पू रामायण** (गद्य एवं पद्य)

- **परमार वंश के अंतिम शासक महालकदेव (मृत्यु 1305 ई.) को अलाउद्दीन खिलजी की सेना** ने पराजित किया था।

दिल्ली के तोमर (8वीं-12वीं शताब्दी)

पृष्ठभूमि:

- दिल्ली के तोमर **हरियाणा पर शासन करते थे और दिल्लिका (दिल्ली)** उनकी राजधानी थी। वे **प्रतिहारों** के सामंत थे।
- **मध्ययुगीन बार्डिक साहित्य (आयरलैंड और स्कॉटलैंड के गेलिक भागों के बार्डिक स्कूलों में प्रशिक्षित विद्वानों के एक वर्ग द्वारा रचित)** ने इस राजवंश को "**तुअर**" (**Tuar**) नाम दिया और उन्हें 36 राजपूत वंशों में से एक के रूप में वर्गीकृत किया है।
  - उनका शाकंभरी के चाहमानों के साथ संघर्ष होता था और उनके शासन का पालन चाहमानों द्वारा किया जाता था।

- **13वीं सदी के पालम बावली** (बावड़ीदार कुआँ) के शिलालेख से पता चलता है कि हरियानिका की भूमि पर पहले **तोमरों** का शासन था , फिर **चौहानों का** और उसके बाद **शकों का शासन हुआ।**
- सबसे महत्त्वपूर्ण राजा **अनंगपाल तोमर था।**
  - उसने **दिल्ली की स्थापना की** और उसका वर्णन **महरौली** के लौह स्तंभ के **11वीं शताब्दी के शिलालेख में किया गया है।**
  - उसके **सिक्कों पर घुड़सवार और वृषभ की आकृति** अंकित है साथ ही **उन पर "श्री सामंत-देव"** उपाधि भी अंकित है। ये सिक्के, शाकंभरी चाहवान राजा **सोमेश्वर** और **पृथ्वीराज तृतीय के सिक्कों के समान थे।**

योगदान:

- दिल्ली क्षेत्र में सबसे पुराने सर्वाइविंग (बावड़ीदार कुआँ) निर्माण करवाया।
- **अनंगपाल द्वितीय, महरौली क्षेत्र** में **लाल कोट** के गढ़ का संस्थापक था और उसने **अनंग ताल के** नाम से एक ताल भी बनवाया था।
- प्रसिद्ध **सूरज कुंड जलाशय** (फरीदाबाद, हरियाणा के पास) का निर्माण **तोमर राजा सूरजपाल** द्वारा करवाया गया था।

शाकंभरी के चाहमान या चौहान (छठी-बारहवीं शताब्दी ई.)

शाकंभरी के चाहमान राजवंश का नाम उनकी राजधानी, राजस्थान के **सांभर, के नाम पर रखा गया था।** इसकी स्थापना **सिंहराज (944–971 ई.) ने की थी।**

महत्त्वपूर्ण शासक

- **अजयराज (1110–1135 ई.) ने नागौर पर** पुनः कब्जा किया और गजनवी को आगे बढ़ने से रोका।
  - उसने **अजमेर (अजयमेरु) की स्थापना की।**
  - उसके सिक्कों पर **रानी सोमलदेवी** का नाम अंकित है।
- उसके पुत्र **अर्णोराज ने यामिनियों (गजनी साम्राज्य) को** रोका और **विवाह** के माध्यम से गुजरात के **चालुक्य शासक के साथ गठबंधन किया।**
- अर्णोराज के पुत्र **विग्रहराज चतुर्थ (1150–1164 ई.) ने** दिल्ली और हांसी पर कब्जा करके चौहान राज्य का विस्तार किया तथा उसे एक साम्राज्य के रूप में स्थापित किया।
  - वह साहित्य का संरक्षक था और उसकी नाटक कृति **हरकेलि** अजमेर के शिलालेख पर उत्कीर्ण है।
  - **ललित-विग्रहराज की** रचना उसके दरबारी कवि **सोमदेव ने की थी।**
  - **अढ़ाई दिन का झोंपड़ा (अब मस्जिद) का** निर्माण कराया जो **मूल रूप से एक विद्यालय था।**
- इस घराने के अंतिम शासक **पृथ्वीराज तृतीय (1177–1192 ई.) ने कन्नौज, गुजरात और चंदेल पर आक्रमण किया।**
- **चंदबरदाई ने** पृथ्वीराज तृतीय के जीवन पर **पृथ्वीराज रासो (ब्रज भाषा में)** लिखी।
- **पृथ्वीराज विजय भी जयानक** द्वारा लिखित उसके शासनकाल का एक वृत्तांत है।
- पृथ्वीराज तृतीय ने **मुहम्मद गौरी के साथ दो युद्ध लड़े।**
  - **तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.):** इसमे राजपूतों की विजय हुई; हालाँकि, मुहम्मद गौरी भागने में सफल रहा और गजनी लौट गया।
  - **तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.):** इस युद्ध में **पृथ्वीराज, मुहम्मद गौरी** से हार गए जिससे भारत में शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।।
- चौहान वंश की शाखाओं ने रणथंभौर, नाडोल और जालौर पर भी शासन किया। 14वीं शताब्दी की शुरुआत में अलाउद्दीन खिलजी ने अजमेर और जालौर पर कब्जा कर लिया।

गहड़वाल (11वीं-12वीं शताब्दी ई.)

गहड़वाल सूर्यवंशी क्षत्रिय थे जिन्होंने **11वीं शताब्दी के अंत** में **कन्नौज** राज्य पर शासन किया था। उन्होंने धीरे-धीरे **पालों को बिहार** से बाहर खदेड़ दिया और बनारस को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।

शासक और उनका योगदान:

- **चंद्रदेव (लगभग 1090 ई.):** उसने गहड़वाल **राजवंश की स्थापना की** और प्रतिहारों एवं राष्ट्रकूटों से दिल्ली को सफलतापूर्वक छीन लिया।
- **विजयचंद्र (1154–1170 ई.):** उसने गजनवियों के आक्रमणों का सफलतापूर्वक सामना किया। उसके शासनकाल के दौरान दिल्ली उसके हाथ से निकल गई और तोमर शासकों ने विजयचंद्र को अपने अधिपति के रूप में मान्यता देना बंद कर दिया।

जयचंद्र (1170–1194 ई.)

- **पृथ्वीराज चौहान** के नेतृत्व में अजमेर के चौहानों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया।
- **चंदावर के युद्ध** (1194 ई.) (फिरोजाबाद के पास, यमुना नदी के तट पर) में **मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र को** पराजित कर साम्राज्य पर कब्जा कर लिया।
- **जयचंद्र** के पोते **सियाजी ने राठौड़ वंश की** स्थापना की, जो जोधपुर से मारवाड़ रियासत पर शासन करता था।
- **इल्तुतमिश** की विजय के साथ ही कन्नौज का गौरव समाप्त हो गया।

त्रिपुरी के कलचुरी (10वीं-12वीं शताब्दी)

- **कोकल्ल प्रथम (845-855 ई.)** ने कलचुरी वंश की स्थापना की। वह सिंध के तुर्की सैनिकों को हराने के लिए और चंदेलों के साथ विवाह के माध्यम से गठबंधन करने के लिए जाना जाता था। उसके साम्राज्य का पहला केंद्र नर्मदा **पर महिष्मति था।**
- प्रसिद्ध **कवि राजशेखर** कलचुरी दरबार में रहता था।
- इन्हें **कटसुरी, हैहय और चेदी के नाम से भी जाना जाता है।**
- कई सशक्त शासकों के बावजूद, 10वीं शताब्दी के अंत में इस राजवंश का पतन हो गया, लेकिन 1015 ई. के आसपास जबलपुर में **गांगेयदेव के नेतृत्व में इसका पुनरुत्थान हुआ।**
- उसके पुत्र, **कर्ण (इस राजवंश के सबसे महान शासक) ने बनारस और प्रयागराज सहित पश्चिम बंगाल तक** महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय विस्तार किया और मालवा के खिलाफ, चालुक्यों के साथ गठबंधन किया।

गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) (950-1300 ई.)

- **भीम प्रथम (1022-1064 ई.)**: इसके शासनकाल के दौरान **महमूद गजनी ने** गुजरात पर आक्रमण किया और सोमनाथ मंदिर को लूटा।
- **जयसिंह सिद्धराज (1092-93 ई.) ने** साम्राज्य को सुदृढ़ किया और उसका विस्तार किया। मालवा के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त करने (1137 **ई.**) के बाद, उसने **अवंतीनाथ (मालवा के स्वामी)** की उपाधि धारण की।
- वह **शिव भक्त था** और उसने सिद्धपुर में **रुद्रमहाकाल मंदिर का निर्माण करवाया।**
- उसने जैन विद्वान **हेमचंद्र** को संरक्षण प्रदान किया।
- उसका उत्तराधिकारी **कुमारपाल, जैन धर्म का** अंतिम प्रसिद्ध शाही **समर्थक था**। कुमारपाल के नाबालिग पोते के शासनकाल के दौरान गुजरात को **मुहम्मद गौरी के आक्रमण का सामना करना पड़ा**।
- गुजरात के अंतिम हिंदू राजा **कर्ण द्वितीय ने अलाउद्दीन खिलजी की** सेना का सामना किया।

कश्मीर

- कश्मीर में **कार्कोट वंश (कर्कोटक वंश), जो ललितादित्य मुक्तापीड** जैसे शासकों के लिए जाना जाता है, के बाद 9वीं शताब्दी के मध्य में **उत्पल वंश का शासन स्थापित हुआ।**
- **उत्पल राजवंश** के संस्थापक **अवंतीवर्मन (855-883 ई.) ने** बाढ़ से राहत प्रदान करने के लिए जल निकासी और सिंचाई प्रणालियों का पर्याप्त विकास किया। उसने **अवंतीपुर शहर की स्थापना की** और कई मंदिरों का निर्माण कराया।
- प्रसिद्ध महिला शासक **रानी दिद्दा का शासनकाल अशांति से भरा रहा और लोहार राजवंश** का उदय हुआ। **1172 ई.** में इस राजवंश के पतन के परिणामस्वरूप दो शताब्दियों तक अराजकता की स्थिति बनी रही, जिसका अंत **1339 ई.** में **शाह मीर** द्वारा **रानी कोटा** को अपदस्थ करने के साथ हुआ, जो कश्मीर में हिंदू शासन की समाप्ति का प्रतीक था।

पूर्व और उत्तर-पूर्व के राजवंश

असम के राजवंश

1. **सलामा/सलस्तम्भ राजवंश (लगभग 800-1000 ई.पू.)**
   - असम, जिसे ऐतिहासिक रूप से कामरूप या प्रागज्योतिषपुर के नाम से जाना जाता है, देवपाल के शासनकाल के दौरान पाल शासकों के प्रभाव में था।
   - 800 ई. में, हरजवरमन ने पालों से स्वतंत्रता की घोषणा की और सलामा/सलम्बा राजवंश की स्थापना की। इसने असम में अपनी क्षेत्रीय स्वतंत्रता को स्थापित कर उसकी पुष्टि की।
   - इसकी राजधानी, हरुप्पेश्वर, ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्थित थी, जो व्यापार और संचार के लिए नदी के मार्गों से लाभान्वित थी।
2. **प्रलम्ब राजवंश (9वीं शताब्दी)**
   - सलामा राजवंश के बाद, 9वीं शताब्दी ई. के दौरान असम में प्रलम्ब राजवंश का उदय हुआ।
   - इस राजवंश के एक अज्ञात शासक द्वारा बख्तियार खिलजी के आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल किया, जिससे आक्रमणकारियों को भारी क्षति हुई।
3. **अहोम साम्राज्य (1228 ई. के बाद)**
   - शान जनजाति का एक उपसमूह अहोम, 1228 ई. में सुकफा के नेतृत्व में असम में आया और अहोम साम्राज्य की स्थापना की। असम नाम की उत्पत्ति अहोम शासन से हुई।
   - राज्य पाइक प्रणाली पर निर्भर था, जो जबरन श्रम का एक रूप था, जहाँ पाइक राज्य के लिए विभिन्न क्षमताओं के साथ कार्य करते थे।

वर्मन और सेन (पूर्वी बंगाल)

- **11वीं शताब्दी की शुरुआत में** वर्मन सत्ता में आए, उनके बाद **सेन वंश ने सत्ता संभाली**, जो संभवतः **कन्नड़ भाषी क्षेत्र से आए थे और दक्षिणापथ** के राजाओं के साथ अपने संबंध का दावा करते थे।
- **विजयसेन** एक प्रसिद्ध सेन राजा था जिसने **1095 ई. से शासन करना प्रारंभ किया**। उसने क्षेत्र के सांस्कृतिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसके शासनकाल का विवरण **देवपाड़ा प्रशस्ति शिलालेख में दिया गया है**। उसके उत्तराधिकारी **बल्लाल सेन को उसकी शिक्षा, लेखनकौशल और कुलीनवाद** की सामाजिक व्यवस्था की शुरूआत के लिए जाना जाता था।
- **अंतिम हिंदू शासक** और **बल्लाल सेन के पुत्र लक्ष्मणसेन, जो अपने शासन काल में सांस्कृतिक प्रगति के लिए जाने जाते थे,** के दरबार में **जयदेव (गीत गोविंद), हलायुध** और **श्रीधरदास** जैसे प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उसके उत्तराधिकारी ने 13वीं शताब्दी के मध्य तक वंग पर नियंत्रण बनाए रखा, उसके बाद **देव राजवंश ने** इस पर कब्जा कर लिया।

कलिंग, उड़ीसा

- **7वीं शताब्दी के मध्य** में उड़ीसा **शैलोद्भव वंश के सैन्यभीत माधववर्मन** (श्रीनिवास) के शासन के अधीन था, जो **अश्वमेध यज्ञ** करने के लिए प्रसिद्ध थे।
- इस राजवंश का प्रभुत्व **8वीं शताब्दी के मध्य तक रहा**। इसके बाद, उड़ीसा पर कई राजवंशों का शासन रहा, इनमें से **कर और भंज राजवंश विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कर राजवंश में** कम से कम **पाँच महिला शासक रहीं हैं।**
- **मैसूर के गंगों** से संबंधित पूर्वी **गंगों ने कलिंग** में अपना शासन स्थापित किया, जिसकी राजधानी **कलिंगनगर थी।**
   - एक प्रसिद्ध शासक **अनंतवर्मन चोडगंग ने उत्कल और कलिंग को** एकीकृत किया और **1078 ई. के आस-पास वह अपने पिता का उत्तराधिकारी बना**। उसने उड़ीसा के राज्यक्षेत्र का विस्तार किया।
   - **चोल आक्रमण का** सामना करने के साथ, उसने चोलों की भूमि पर कब्ज़ा कर लिया तथा अपने राज्य को **"गंगा से गोदावरी" तक बढ़ाया।** उसने आधुनिक ओडिशा की नींव रखी तथा **जगन्नाथ मंदिर का** निर्माण करवाया।

- उसके द्वारा स्थापित साम्राज्य ने गंगा तक नियंत्रण बनाए रखा और बंगाल के आक्रमणों का विरोध किया, जिसमें **बख्तियार खिलजी का आक्रमण भी शामिल था।**
- **नरसिंह प्रथम ने (1238-1264 ई.) कोणार्क में सूर्य मंदिर** का निर्माण शुरू करवाया।

- 15वीं शताब्दी के मध्य में, कलिंग में एक नया शाही परिवार, **सूर्यवंश** सत्ता में आया।

भुवनेश्वर स्थित लिंगराज मंदिर (शिव से संबंधित) का निर्माण **सोमवंशी राजा ययाति प्रथम ने करवाया था।**

दक्कन और दक्षिण भारत के राजवंश

कल्याणी के चालुक्य (10वीं-12वीं शताब्दी ई.)

- **कल्याणी के चालुक्य वंश** का संस्थापक **तैलप द्वितीय (973-997 ई.) राष्ट्रकूटों का** उत्तराधिकारी बना, उसने अपनी राजधानी कर्नाटक के **कल्याणी (आधुनिक बीदर जिला)** में स्थापित की।
- उसने पड़ोसी क्षेत्रों को अपने अधीन कर लिया, जिनमें **मैसूर के गंग, मालवा के परमार, गुजरात के चालुक्य** और **चेदि के कलचुरी शामिल थे।**
- इस अवधि में उल्लेखनीय **चालुक्य-चोल प्रतिद्वंद्विता देखी गई, जिसमें तुंगभद्रा नदी को** दोनों साम्राज्यों के बीच की सीमा के रूप में स्वीकार किया गया।
- **विक्रमादित्य षष्ठम ने शक संवत** के स्थान पर **चालुक्य-विक्रम संवत की** स्थापना की।
- उसने **विक्रमांकदेवचरित** के रचयिता बिल्हण और **मिताक्षरा** (याज्ञवल्क्य स्मृति पर टिप्पणी) के लेखक **विज्ञानेश्वर** जैसे प्रख्यात विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया था।
- 12वीं शताब्दी के मध्य तक चालुक्य शासन समाप्त हो गया, जिससे **वारंगल के काकतीय, द्वारसमुद्र के होयसल और देवगिरि के यादवों के शासन का मार्ग प्रशस्त हो गया। वेंगी के पूर्वी चालुक्य, जो शुरू में चोलों द्वारा संरक्षित थे, अंततः कोलुतुंग** के शासनकाल में चोल साम्राज्य में एकीकृत हो गए।

देवगिरि के यादव

- भगवान कृष्ण के **यदु वंश** से होने का दावा करने वाले यादवों को एक स्वदेशी मराठा समूह (प्रारंभ में राष्ट्रकूटों और बाद में पश्चिमी चालुक्यों के सामंत) माना जाता है।
- **भिल्लम पंचम** ने **देवगिरि को** अपनी राजधानी बनाकर यादव साम्राज्य की **स्थापना की।** इस साम्राज्य का पतनशील पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य के क्षेत्रों को लेकर **होयसलों के साथ संघर्ष हुआ।**
- **सिंहण (1210-1246 ई.) ने** यादव साम्राज्य को उसके चरम पर पहुँचाया। इस राजवंश का अंतिम प्रसिद्ध शासक **राम चंद्र देव था** जिसने **अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण का सामना किया था।**

काकतीय राजवंश (950-1323 ई.)

- इनकी उत्पत्ति **प्राचीन तेलुगु वंश** से हुई थी, वे **पश्चिमी चालुक्यों के सामंत थे।**
- **बेत प्रथम (सबसे पहले ज्ञात शासक) ने नलगोंडा जिले** (हैदराबाद) में एक छोटे राज्य की स्थापना की। **पश्चिमी चालुक्य राजा, विक्रमादित्य षष्ठम के** निधन के बाद काकतीयों ने चालुक्य सामंतों को हराकर अपना विस्तार शुरू किया।
- एक प्रमुख **काकतीय शासक, गणपति ने** तेलुगु क्षेत्र पर सत्ता का केंद्रीकरण किया, **प्रशासनिक दक्षता** और **व्यापार एवं कृषि** को बढ़ावा देने पर जोर दिया।
- उसने **वारंगल शहर का निर्माण पूरा किया** और अपनी राजधानी वहाँ स्थानांतरित कर दी।
- **रुद्रमादेवी (गणपति की पुत्री) ने रुद्रदेव महाराजा** का नाम धारण किया और उड़ीसा एवं यादवों के खतरों का सामना करते हुए लगभग 35 वर्षों तक शासन किया। वह **पाशुपत शैव मठों की संरक्षक थी।**
- रुद्रमादेवी का पौत्र **प्रताप रूद्र (1295-1323 ई.)** इस राजवंश का अंतिम शासक था।

मोटुपल्ली काकतीयों का प्रमुख बंदरगाह था। वेनिस यात्री **मार्को पोलो** इसी बंदरगाह पर आया था। [यूपीएससी 2017]

चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध)

परिचय

चोल उन तीन शक्तिशाली राजवंशों में से एक थे जिन्होंने प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में **तमिझ (तमिल) देश पर शासन किया था। उन्हें संगम साहित्य में मुवेंधर** में से एक के रूप में वर्णित किया गया है और **अशोक** के शिलालेखों में भी उनका उल्लेख मिलता है।

- चोल साम्राज्य का 9वीं शताब्दी के मध्य में **विजयालय** (संभवतः **पल्लवों का जागीरदार**) के शासनकाल में पुनरुत्थान हुआ, जिसने मुत्तरैयार से कावेरी डेल्टा पर विजय प्राप्त की थी। उसने **तंजावुर (तंजौर) शहर का निर्माण कराया।**
- बाद के चोलों ने स्वयं को संगम युग के प्रसिद्ध चोल शासक **कराईकल** का वंशज बताया।

आदित्य (राजादित्य) और **परांतक प्रथम (जिसने** पांड्यों पर विजय प्राप्त करने के बाद **मदुरैकोंडा** की उपाधि धारण की) के शासन काल में साम्राज्य का और विस्तार हुआ। परिणामस्वरूप, **राष्ट्रकूट राजा कृष्ण द्वितीय के साथ टकराव पैदा हुआ, जिसकी परिणति 949 ई. में तक्कोलम के युद्ध में राजादित्य (चोल)** की हार के रूप में सामने आई।

प्रसिद्ध शासक

राजराज प्रथम (985-1014 ई.)

राजनीतिक महत्त्व की दृष्टि से राजराज प्रथम के युग की तुलना **समुद्रगुप्त से की गई है।**

प्रमुख उपलब्धियाँ/विजय:

- **उसने कई नौसैनिक अभियान** दल भेजे और पश्चिमी तट, श्रीलंका और मालदीव पर विजय प्राप्त की। उसने सैन्य विजय के माध्यम से **श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों पर सीधा नियंत्रण स्थापित कर लिया।**

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH

अन्य पुस्तकें एवं कार्यक्रम

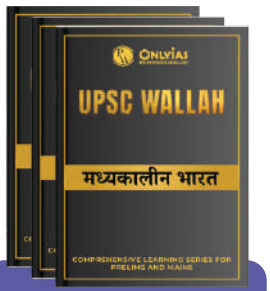

BOOKS

व्यापक कवरेज

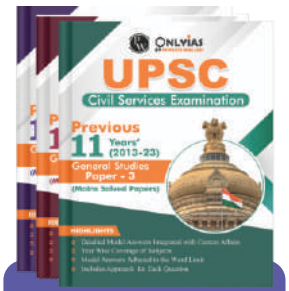

BOOKS

पिछले 11 वर्षों के हल प्रश्न-पत्र (PYQs) (प्रारंभिक+ मुख्य परीक्षा)

FREE MATERIAL

उड़ान (प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीज़न)

FREE MATERIAL

उड़ान प्लस 500 (प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीज़न)

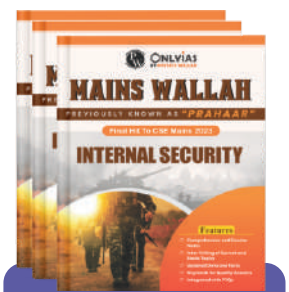

FREE MATERIAL

मेन्स रिवीज़न

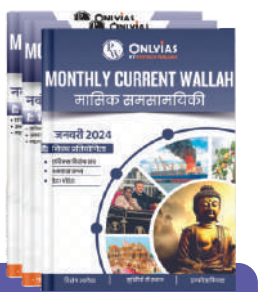

CURRENT AFFAIRS

मासिक समसामयिकी

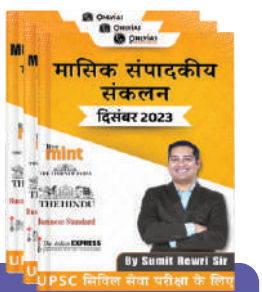

CURRENT AFFAIRS

मासिक संपादकीय संकलन

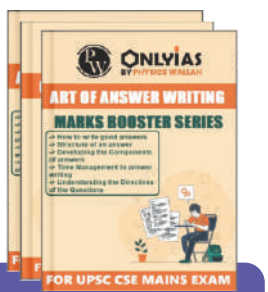

FREE MATERIAL

क्विक रिवीज़न बुकलेट

TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट

TEST SERIES

35+ प्रिलिम्स टेस्ट

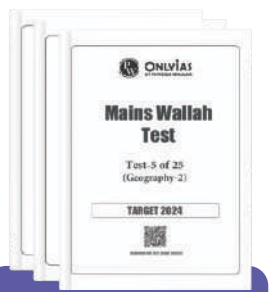

TEST SERIES

25+ मेन्स टेस्ट

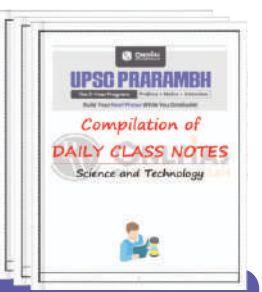

CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और अभ्यास प्रश्न

All Content Available in Hindi and English

Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Prayagraj, Lucknow, Patna

₹ 239/-
ISBN 978-93-6897-838-1
ce09d141-8fce-4a9f-b515-e23d800afda0